2005, the country reported one molestation every 15 minutes; one crime against women every three minutes; one dowry death every 77 minutes; one rape every 29 minutes; cruelty by husband and relatives one case every nine minutes; and one sexual harassment case every 53 minutes. Rape, molestation, sexual harassment, murder, and dowry deaths were reported more frequently than dacoity, arson or counterfeiting.

Sir, it is distressing that the National Capital, Delhi, tops the list of crime against women. Among the 35 mega cities in the country, those having more than 10 lakh of population and above, Delhi alone reported 33.2 per cent (562 cases) of the total 1,693 rape cases. The report further added that out of 2,409 cases of kidnapping and abduction of women, Delhi recorded 37.4 per cent or 900 cases. The alarming data shows that Delhi continued to be unsafe for women, recording highest rate of crime against the fair sex at 27.6 per cent against the national average of 14.1 per cent. Delhi is followed by Andhra Pradesh, which reported 26.1 per cent of such crimes. Delhi also topped the list of crime against children with 6.5 per cent as compared to national average of 1.4 per cent. I would strongly urge the Union Home Ministry to take urgent steps to check crime explosion against hapless women of India. Thank you, Sir.

SHRIMATI BRINDA KARAT (West Bengal): Sir, I associate myself with the special Mention made by the hon. Member.

SHRI THANGA TAMIL SELVAN (Tamil Nadu): Sir, I also associate myself with the Special Mention made by the hon. Member.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: The Hosue is adjourned to meet at three of the clock.

The House then adjourned for lunch at
fifty-eight minutes past one of the clock.

The House re-assembled after lunch at three of the clock,
THE DEPUTY CHAIRMAN in the chair.

The Jallianwala Bagh National Memorial (Amendment) Bill, 2006

पर्यट्न मंत्री और संस्कृति मंत्री (श्रीमती अम्बिका सोनी) : उपसभापति महोदय, मै प्रस्ताव करती हूं कि **:**

जलियांवाला बाग राष्ट्रीय स्मारक अधिनियम, 1951 का संशोधन करने वाले विधेयक पर, लोक सभा द्वारा पारित रूप में,विचार किया जाए।"

महोदय, मै आपकी इजाजत से यह बताना चाहती हूं कि राष्ट्रीय स्मारक अधिनियम 1951, जलियांवाला बाग, अमृतसर में 13 अप्रैल, 1919, बैसाखी के दिन मारे गए शहीदों और घायल होने वाले व्यक्तियों की स्मृति को अमर रखने के लिए एक राष्ट्रीय स्मारक के परिनिर्माण और प्रबंधन के लिए पारित किया गया था। अधिनियम के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए न्यास को हर प्रकार से सशक्त किया गया था। जलियांवाला बाग राष्ट्रीय स्मारक न्यास में आजीवन के लिए नियुक्त ऐसे तीन महानुभाव न्यासी भी है, जो अब जीवित नही है, वे है, श्री जवाहर लाल नेहरु डा. सैफुद्दीन किचलू और मौलाना अबुल कलाम आजाद। इस अधिनियम में संशोधन किए बगैर इन तीन रिक्त स्थानों को हम भर नही सकते है। आजीवन न्यासियों की मृत्यु हो जाने के कारण जो रिक्तियां हैं, उनको भरने की दृष्टि से और न्यास को और अधिक क्रियाशील बनाने के लिए वर्तमान विधेयक के माध्यम से इस अधिनियम में संशोधन करना आवश्यक हो गया है। हम लोगों ने संशोधन के रूप में यह सुझाव दिया है कि ये जो तीन रिक्तियां है, इसमें देश के प्रधान मंत्री अध्यक्ष के रूप में रखे जाएं विपक्ष के नेता को रखा जाए और जो मंत्री संस्कृति प्रभार संभालते है, उन्हें रखा जाए। आप खुद देखेंगे कि हमने कोई भी इस तरह की कोशिश नही की है जिससे जो बुनियादी जज्बात इस ट्रस्ट को बनाते समय दृष्टि में रखे थे और उस समय की भावनाएं थी, उनमें फेर- बदल किया गया हो। हमने उनमें कोई भी फेर- बदल करने का प्रयास नही किया। इसके अलाव हमने इस विधेयक के द्वारा यह संशोधन रखा है कि जो न्यास के एकाउंट्स हैं, उनको कंट्रोलर एंड ऑडिटर जनरल के मार्फत सर्टिफाई एंड ऑडिट किया जाए और दोनों सदनों में उन एकाउंट्स को पेश किया जाए।

सर, इस संशोधन को पेश करते वक्त मै इस पूरे सदन को कुछ क्षणों के लिए उस 1919 के माहौल में ले जाना चाहूंगी जब पूरे देश में अंग्रेजों के जुल्म के खिलाफ एक जोरदार आंदोलन था ।उसी वक्त एक रोलैट ऐक्ट भी पास किया गया था। जुल्म और अत्याचार करना, हर तरह की सभाओं पर पाबंदी लगाना, उस रोलैट ऐक्ट का एक बेसिक कैरेक्टर था। इस रोलैट ऐक्ट के खिलाफ बहुत से प्रदेर्शन हुए और इस जलियांवाला बाग में डा.किचलू और डा. सत्यपाल के नेतृत्व में एक जोरदार प्रदर्शन रखा गया, जिसमें इन दोनों को गिरफ्तार किया गया। इन दोनों की गिरफ्तारी से पूरे भारतवर्ष में एक आंदोलन छिड़ गया था,महात्मा गांधी को पलवल में गिरफ्तार किया गया था ।पूरे देश में हाहाकार मच गया था, लेकिन इसके में प्रोटैस्ट 13 अप्रैल,बैसाखी के दिन, जब हजारों की तादाद में लोग गांवों से हरमंदिर साहब में स्नान करने और अमृत छकने के लिए आए थे, ये सभी लोग जलियांवाला बाग तीन तरफ एकत्रित हुए । हममें से तकरीबन सभी लोग यह जानते ही हैं कि जलियांवालां बाग तीन तरफ से बहुत ऊंची दीवारों से घिरा हुआ है और उसके अंदर जाने

के लिए एक बहुत तंग रास्ता है। जब लोग हजारों की तादाद में अंदर जाते रहे, कोई कहता है पंद्रह हजार लोग थे, कोई कहता है बीस हजार थे।

जब एक शातिपूर्वक सभा में शरीक होने के लिए अंदर गए, तुरंत उधर जनरल डायर आए और उनके सिपाही भी आए। उन सिपाहियों को हुक्म दिया गया कि अंधाधुंध गोलियों की बौछार की जाए। यह न देखते हुए कि बच्चा कौन है, औरत कौन है, वृद्ध कौन है, अंधाधुध गोलियों की बौछार की गयी और जो अनुमान लगाए गए हैं, उनके अनुसार तकरीबन हजार आदमी वहीं, या जो कूंए में कूदकर मर गए या गोलियां के शिकार बन गए। आज भी उन गोलियों के निशान हम सबको यह याद दिलाते हैं कि हमारी आजादी के लिए कितनी ज्यादा शहादतें दी गयी। सर, उस वक्त जो जनरल डायर थे, उन्होंने इसमें बहुत फखर महसूस किया कि भारतीयों को, स्वतंत्रता सैंनानियों को, जो अपनी आजादी देखना चाहते थे, कितनी अच्छी तरह से उनको दबा दिया गया है। लेकिन वहां पर ऐसा भी एक व्यक्ति था, उधम सिंह जिसने यह प्रण किया कि जब भी संभव होगा, इस जनरल डायर को मै खत्म करुंगा-जो गर्वनर जनरल थे-और 21 साल बाद उसने अपनी शपथ को पूरा किया था। मै सिर्फ यह बताना चाहूंगी कि यह भावनाएं हमारे उस वक्त के लोगों ने मद्देनजर रखते हुए उन्होंने यह नही सोचा कि हम पंजाब में नही रहते, हमें तो घुटनों के बल नही चलाया गया, हमे तो पिंजरो में बंद नही किया गया- जहां से भी कही से हुआ हो, उन्होंने विरोध जाहिर किया अग्रेजों की गोलियों का सामना किया, शहादत दी और बदला लेने की भावना से आगे बढ़ते चले गए। इसी भावना को, इसी यादगार को आने वाली पीढ़ियां याद रखें, कभी न भुला पाएं इसीलिए यह न्यास बनाया गया था। जलियांवाला बाग का जो ट्रस्ट 1951 में बनाया गया था, इन्ही शहीदों की याद को अमर रखने के लिए बनाया गया था। जो आजीवन गणमान्य सज्जन वहां थे, उनकी मृत्यु के कारण हालांकि 1964 में लास्ट डेथ हुई,शायद हमें पहले ही इस संशोधन को लाना चाहिए था, लेकिन आज जब यह संशोधन लाया जा रहा है, मै अपनी तरफ से सदन को यह आश्वासन देना चाहती हूं कि उस वक्त के जजबात से कोई खिलावड़ नहीं किया। उस ट्रस्ट में फेर-बदल करके कुछ और राजनीति नही लाया गयी। मैंने इसी तरह से कोशिश की कि प्रधानमंत्री, विपक्ष के नेता और जो मंत्री प्रभारी हो, सांकृतिक मामलों का इन तीनों को रखते हुए कोशिश यह की है कि उन भावनाओं को बरकार रखा जाए। We honour those people the way they were honoured in 1951. We should not dilute the memory of those people and the tribute we have been paying constantly, year after year, every time, should not be diluted. That is why I have brought in this very minimal amendment to the original Act o 1951. I request the House to get it passed:

The question was proposed.

श्री सुरेश भारद्वाज (हिमाचल प्रदेश) : धन्यवाद उपसभापति महोदय, जलियांवाला बाग का नाम जब हमारे सामने आता है, तो हमें एक कवि की यह पंक्तियां याद आती हैं,

जलियांवाला बाग यह देखो, यहां चली थी गोलियां,
एक तरफ बंदूकें दन –दन, एक तरफ थी टोलियां,
मरने वाले बोल रहे थे इंकलाब की बोलियां.

माननीय उपसभापति जी, हिन्दुस्तान का ऐसा प्रदेश, जो वीरों की धरती कहलाता है और ऐसा प्रदेश जो आज संपूर्ण देश को अनाज भी पैदा करके देता है, उस पंजाब के पवित्र शहर अमृतसर में जलियांवाला बाग स्थित है। हिन्दुस्तान में हजारों मील दूर से फिरंगी यहां पर आए और उन्होंने हिन्दुस्तान पर कब्जा करके तीन सौ वर्षो से अधिक कार्यकाल के लिए यहां पर अपना शासन पूरे देश पर चलाया। उस शासनकाल में सारे देश में अनेक प्रकार के तरीकों से विभिन्न समयों पर, चाहे वह 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम हो अथवा उसके पश्चात् के विभिन्न क्रांतिकारी आंदोलन हो। या उसके पश्चात जो राष्ट्रीवादी आंदोलन सारे देश में हुए जिनके कारण 1947 में हिन्दुस्तान आजाद हुआ। प्रथम विश्व युद्ध के समय जब अंग्रेजों को हिन्दुस्तान की मदद की आवश्यकता थी, उस समय उन्होंने हमारे देश के लोगों से कहा कि हमारी इस युद्ध में मदद करो, हम भारत को आजादी दे देंगे। लेकिन 1919 में हमें आजादी देने के स्थान पर उन्होंने हमारे ऊपर अपना शिकंजा और ज्यादा तेजी से कसना प्रारम्भ कर दिया। दिल्ली के चांदनी चौक में महात्मा हंस राज जी के नेतृत्व में अंग्रेजो ने जो Rowlal Act के नाम से कानून पास किया था, उसका विरोध करने के लिए बहुत बड़ा जुलूस निकला। उसी तरह से वैशाखी के दिन जब अमृतसर में पर्व मनाने के लिए खुशियां मनाने के लिए हजारों लोग जलियांवाला बाग में एकत्रित हुए तो अंग्रेजों ने उन्हे चारों ओर से घेर लिया और जनरल डायर नामक व्यक्ति ने, जो उस समय के अंग्रेजी हुकूमत का एक अहम आला अफसर था, उसके नेतृत्व में वहां पर गोलियां चलाकर सारी धरती को लाल कर दिया। वहां पर जो वतन पर मर मिटने वाले लोग थे, स्वतंत्रता चाहने वाले लोग थे, उन्हे संगीनों और गोलियां से भून डाला। उस समय डॉ. किचलू और सतपाल जी जैसे महान नेताओं के नेतृत्व में स्वतंत्रता संग्राम देश में चल रहा था। इस देश को आजाद कराने के लिए अनेकों लोगों ने कुर्बानिया दी है। जब 1947 में भारत आजाद हुआ तब अपेक्षा इस बात की थी कि देश में जिन लोगों ने आजादी की लड़ाई में भाग लिया है, जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में अपना सर्वस्व न्यौछावर किया है, जिन्होंने देश की आजादी के लिए कुर्बानियां दी है, उन लोगों को कम से कम अच्छे तरीके से याद किया जाएगा। आजादी मिलने के पश्चात जो बहुत से नेता आजादी की लड़ाई में शामिल थे, वे इस देश की हुकूमत में आए और देश में आजादी की लड़ाई लड़ने वाले लोगों के लिए इस प्रकार कk स्मारक इत्यादि बनाने का काम भी प्रारम्भ हुआ। जलियांवाला बाग में जिस प्रकार का हत्या कांड

अंग्रेजों ने किया था, वह देश की लड़ाई का एक टर्निंग प्वाइंट था। उसके बाद की आजादी की जंग बड़ी तेजी से, चाहे क्रांतिकारी तरीके से अथवा शांतिमय ढ़ंग से प्रारम्भ हुई थी। इसलिए उस समय देश के उन नेताओं ने यह तय किया कि जलियांवाला बाग के लिए एक ट्रस्ट बनाया जाए, जो उसकी संपत्ति और उसकी देखभाल करे और वहां पर वह मैमोरियल बने, उसकी ठीक प्रकार से देखभाल हो, ताकि आने वाली पीढ़ियां कुछ सीख सकें, उन्हें इस बात का स्मरण हो सके कि इस देश को जो आजादी प्राप्त हुई है, वह कितनी मेहनत, मशक्कत कितने कडे परिश्रम और कितनी कुर्बानियां देने के बाद मिली है। इसके लिए वहां पर उस मैमोरियल को बनाने के लिए इस ट्रस्ट का निर्माण किया गया। यह बहुत ही अच्छा कदम था और उस ट्रस्ट में उस समय के तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू किचलू साहब और मौलाना अबुल कलाम आजाद शामिल थे, जो व्यक्ति के रुप में ट्रस्टीज बनाए गए थे। ट्रस्ट का काम चलता रहा। उसमें गर्वनर ऑफ पंजाब और चीफ मिनिस्टिर ऑफ पंजाब को भी सदस्य के रुप में शामिल किया गया था, लेकिन इन तीनों महान नेताओं की मृत्यु के पश्चात विडंबना इस बात की है की सरकार को और उन नेताओं के कारण आज जो सत्तासीन हुए है, उन्हे यह याद तक नही आई कि इस जलियांवाला बाग मैमोरियल ट्रस्ट में जब ये तीन व्यक्ति, जो by name वहां पर थे, जब इनकी मृत्यु हो गई है, देहावसान हो गया है, तो उसके स्थान पर नयी व्यवस्था की जानी चाहिए। दु:ख की बात यह है कि 1979 में सरकार के संस्कृति मंत्रालय ने यह बता दिया था और उस समय यह विचार हुआ था कि इसमें अमेडमेट करने की आवश्यकता है। 1980 के पश्चात लगातार फिर उसी पार्टी का शासन यहां पर रहा, लेकिन कभी इस बात की चिंता तक नही हुई कि इस मैमोरियल ट्रस्ट का जो कानून बनाया है, हमारे महान स्वतंत्रता सेनानियों ने इस कानून की जो नीव रखी है, उसको फिर से ठीक किया जाए। 24 साल बीत गए 24 सालों तक इस कानून को आप बदल नही सके। 1998 में पहली बार कानून को बदलने के लिए विधेयक पेश किया गया और उसके बाद उसे स्टैडिंग कमेटी में भेजा गया। अब जो यह कानून बनाया जा रहा है, उसमें जो तीन मेंबर्स, जो आजीवन सदस्य थे, आजीवन ट्रस्टी थे, उनके स्थान पर नयी व्यवस्था की गई है और इसके अंतर्गत प्रधानमंत्री इसके चेयरपरसन होंगे। बहुत खुशी की बात है, कोई भी व्यक्ति प्रधान मंत्री हो, जलियांवाला बाग मैमोरियल ट्रस्ट, एक महत्वपूर्ण ट्रस्ट है और एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घट्ना का गवाह है,इसलिए उसमें प्रधानमंत्री का चेयरमैन होना बहुत ही उचित है। जो नया कानून यहां पर लाया जा रहा है, उसमें कल्चर मिनिस्टर को भी एक सदस्य बनाया गया है, इससे भी किसी का विरोध नही हो सकता हैं इसमें तो 3 eminent persons रखें जाएंगे,इसमें भी कोई विरोध नहीं है,लेकिन eminet person की व्याख्या क्या होगी, जो eminet person आज की परिस्थितियों में इस ट्रस्ट में रखे जाने चाहिए, वे कौन eminet person हो सकते है, इसकी कोई व्याख्या इस बिल में नही की गई है। स्टैडिंग कमेटी में इस बात पर विचार हुआ था और उसकी यह रिकमंडेशन है कि इसके लिए कोई प्रावधान किया जाए एक प्रावधान यह किए जाने की सिफारिश की गई थी कि कम से कम एक ऐसा eminent

Person इसका मेंबर होना चाहिए, जो अमृतसर का रहने वाला हो। इस प्रकार का जो ट्रसट है, जिसमें आजादी की लड़ाई का जिक्र है और उस ऐतिहासिक घटना को अगर हमें संजोकर रखना है और उसकी देखभाल करनी है, तो उसके लिए कम से कम जो आजादी की लड़ाई में भाग लेने वाले लोग थे, उनका इसमें जिक्र हो जाता, व्याख्या हो जाती हो अच्छा रहता। अतः कम से कम ये जो 3 eminent persons आप रख रहे हैं, इनके बारे में कोई व्याख्या करके रखा जाना चाहिए था। इसलिए मैं समझता हूं कि माननीय मंत्री जी को इस पर पुनर्विचार करना चाहिए और इसके लिए या तो वे रुल्स और रेगुलेशंस बनाएं और उनमें इसकी व्याख्या करे, अन्यथा ऐसा होता है कि कहीं nominations करनी हैं, 3 लोग इनकी पार्टी के आ जाएंगे, चाहे उनका कोई संबंध जलियां वाला बाग कांड से हो या न हो उनका किसी स्वतंत्रता सैंनानी के घर से कोई संबंध हो या न हो या इस घटना के बारे में वे जानते हों या न जानते हों, लेकिन चूंकि रुलिंग पार्टी का है, इसलिए उसका nomination होना है, इस आधार पर इस प्रकार के व्यक्ति, इस प्रकार के ट्रस्ट में nominate हो जाते हैं। इसलिए इसके लिए रुल्स और रेगुलेशंस में अथवा ऐक्ट में ही प्रावधान करने की आवश्यकता है।

उपसभापति जी, इसमें एक प्रावधान और किया गया है कि President of Indian National Congress भी इसके एक ट्रस्टी होंगे। हमको इसमें बहुत ज्यादा मतभेद नहीं है, लेकिन यह की विडंबना हैं कि जिन फिरंगियों को निकालने के लिए जलियांवाला कांड हुआ,जिसमें हजारों लोग शहीद हुए, जिसमें निर्दोष लोगों को गोलियों से भूना गया, संगीनों से छेद किए गए, जिसमें हजारों लोग स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई लड़ते रहे, उसमें फिर से* ...(**व्यवधान**)... माननीय सभापति जी मैं किसी का नाम नहीं ले रहा हूं ...(**व्यवधान**)

श्री प्रवीण राष्ट्रपाल (**गुजरात**): महोदय*...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: यह रिकॉर्ड में नहीं जाएगा ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: आप बैठिए ...(**व्यवधान**)... It has not gone on record. *(Interruptions)* I have removed it. *(Interruptions)* यहां पर कोई* नहीं हैं...(**व्यवधान**)... It has been deleted. *(Interruptions)* It has been expunged. *(Interruptions)* देखिए, यह ठीक नहीं है ... (**व्यवधान**)... No, you can't call it. *(Interruptions)* आप बैठिए ...(**व्यवधान**)... Nothing will go on record. *(Interruptions)* भारद्वाज जी, आप बोलिए ...(**व्यवधान**)...

श्री विजय कुमार रुपाणी (**गुजरात**): *

श्री रुदनारायण पाणि (**उड़ीसा**):*

श्री प्रवीण राष्ट्रपाल:*

*Not recorded.

SHRI V. NARAYANASAMY (Pondicherry): Sir, this should be removed from the record. *(Interruptions)*

MR. DEPUTY CHAIRMAN: It has been *removed.(Interruptions)*

श्री सुरेश भारद्वाज: माननीय उपसभापति महोदय, मैंने किसी का नाम नहीं लिया है। इस एक्ट में provision है कि President, Indian National Congress इसका सदस्य होगा। अगर इसका विरोध या समर्थन करना, किसी सदस्य का अधिकार नहीं है ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: विरोध और समर्थन कीजिए, मगर यहां कोई* नही है ...(**व्यवधान**)... यहां कोई नहीं है ...(**व्यवधान**)... यह कहना ठीक नहीं है ...(**व्यवधान**)... यह बिल्कुल हलत है, इसे निकाल दीजिए ...(**व्यवधान**)... मैं इसकी permission नहीं दूगां ...(**व्यवधान**)... आप President, Indian National Congress बोलें, वह अलग बात है ...(**व्यवधान**)...

श्री सुरेश भारद्वाज: मैं किसी का नाम नहीं ले रहा हूं ...(**व्यवधान**)... I have never …(Interruptions)… about any person. (Interruptions)

श्री उपसभापति: आप बैठिए ...(**व्यवधान**)... आप बोलिए ...(**व्यवधान**)...

श्री सुरेश भारद्वाज: माननीय उपसभापति जी, मेरा सिर्फ यह objection है कि Indian National Congress हिन्दुस्तान के स्वाधीनता संग्राम का अग्रणी संगठन था, लेकिन वह इनकी कांग्रेस नहीं थीं । ...(**व्यवधान**)..वह इनकी कांग्रेस नहीं थीं ...(**व्यवधान**)...आज उसी कांग्रेस के कई हिस्से है ...(**व्यवधान**)... के कामराज Indian National Congress के अध्यक्ष थे ...(**व्यवधान**)... यदि वे इसमें मैम्बर बनते हैं, तो इसमें कोई objection नहीं होता। लेकिन इसके बाद हिन्दुस्तान में एक कानून बनाया जा रहा है, हिन्दुस्तान की संसद एक कानून बना रही है, उसमें एक ऐसे व्यक्ति को ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: पाणि जी, आप बैठिए ...(**व्यवधान**)...

श्री सुरेश भारद्वाज: माननीय उपसभापति जी, मेरा केवल यह निवेदन है कि इसमें यह जो clause रखा गया है, इस पर Standing Committee में काफी डिबेट हुई है, इसके बाद यह लगातार आती रही है ...(**व्यवधान**)... उसमें आया है ...(**व्यवधान**)... मेरा आज सदन में माननीय मंत्री जी से निवेदन है कि आप Culture Minister रखिए, आप Chief Minister, Punjab रखिए, Governor, Punjab रखिए, आप Prime Minister को बनाएं इसमें कोई objecteion नहीं है। आप किसी का भी मेमोरियल बना दीजिए, लेकिन उसमें किसी पार्टिकुलर पार्टी क अध्यक्ष किसी ट्रस्ट में, वह भी संसद द्वारा पास किए गए विधेयक के द्वारा बनाया जाए, इस बात पर मुझे कड़ा ऐतराज है। इसलिए मैं कम-से-कम इस clause का समर्थन नहीं कर सकता हूं।

माननीय उपसभापति जी, इसके अतिरिक्त इस कानून में जैसा मैंने शुरू में कहा था कि 1979 में Culture Ministry को यह पता चल गया था कि इसमें तीन life members की मृत्यु हो चुकी है,उनके स्थान पर बदलाव करना है, लेकिन उसके पश्चात वे आज तक सोए रहे और आज पुनः जो मैंनेजमेंट कमेटी होगी और उसमें जो एक मैम्बर होगा, वह Culture Ministry होगी और नोडल मिनिस्ट्री Culture Ministry को बनाया गया है। मैं माननीय मंत्री जी से निवेदन करुंगा कि वे इस बात की जांच कराएं कि अभी तक उस ट्रस्ट का किस प्रकार से कामकाज चल रहा है। इसमें व्यवस्था की गई है कि उसका सीएजी के द्वारा ऑडिट होगा। यह बहुत अच्छी बात हैं,बहुत अच्छा किया गया हैं । यह पहले चार्टर्ड एकाउंटेंट के करवाते थे। सीएजी के द्वारा ऑडिट होगा और वह दोनों हाउसेज में रखा जाएगा, लेकिन इसमें इनके पास पैसा ही नहीं है। एक बार एक करोड़ रुपया दिया गया, उसमें कुछ खर्च हुआ, बाकी पूरे ट्रस्ट में वर्षो से कोई पैसा नहीं है और वहां पर कोई काम नहीं हो रहा है। उपसभापति जी, सुबह एक प्रश्न के उत्तर में बताया जा रहा था कि किस प्रकार से पूर्व प्रधान मंत्रियों के स्मारकों पर खर्च किया जाता है। उस में चंद प्रधान मंत्री है जिन पर खर्च होता है, बाकी प्रधान मंत्री तो वैसे ही हैं। उनके लिए कोई जरुरत नहीं है। अगर इसी प्रकार से सारे ट्रस्टों में करना है,इसी प्रकार से इन स्मारकों के बारे में करना है तो मैं समझता हूं कि इस से अच्छा है कि किसी प्राइवेट ट्रस्ट को बना दिया जाए और यह काम दे दिया जाए। वह ज्यादा अच्छी तरह से maintain करेंगे।

अंत मे, माननीय उपसभापति जी, यह बिल बहुत देर से आया, इसकी मैं कड़ी निंदा करता हूं। साथ ही माननीय मंत्री जी से मेरा निवेदन है ...(**व्यवधान**)...

श्री रुद्रनारायण पाणि: सर, वह बैठे-बैठे आर.एस.एस. व नागपुर का नाम ले रहे हैं।

श्री उपसभापति: वह रिकॉर्ड पर नहीं जाएगा ।

श्री बी.के. हरिप्रसाद (कर्णाटक): नागपुर बाबा साहब अम्बेडकर की कर्म-भूमि भी है ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: नहीं-नहीं हरिप्रसाद जी... पाणि जी... बैठिए।

श्री रुद्रनारायण पाणि:*

श्री बी. के. हरिप्रसाद:*

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Nothing will go on record. … (Interruptions)…

श्री सुरेश भारद्वाज: इसलिए मेरा माननीय मंत्री जी से निवेदन है कि आप इस विधेयक को वापस ले। साथ ही प्रेसीडेंट इंडियन नेशनल कांग्रेस से संबंधित क्लॉज को हटाकर उस परिवार के किसी व्यक्ति को रखा जाए जिस ने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया हो।

*Not recorded.

श्रीमती विप्लव ठाकुर: सारे स्वतंत्रता संग्राम परिवार से है ...(**व्यवधान**)...

श्री सुरेश भारद्वाज: महोदय, श्रीमती विप्लव ठाकुर को मैं जानता हूं। वह स्वतंत्रता संग्राम सेनानी की बेटी हैं। इन्हें रख लिया जाए, मुझे इस पर कोई एतराज नहीं होगा। इस बात पर जरुर गौर किया जाना चाहिए अन्यथा इस अमेंडमेंट के बिना मैं इस विधेयक का समर्थन नहीं कर सकता।

SHRI PRAVEEN RASHTRAPAL (Gujarat): Mr. Deputy Chairman, Sir, I thank you very much. I am here to support the Bill presented by the hon. Minister of Culture. One should not dispute it because if you refer to the freedom struggle of this country, it was the longest in the world. The freedom struggle, in the real sense, started in 1857. It started in 1857 and continued up to 14th August, 1947. So, approximately, for hundred years the people of this country were fighting for freedom. It was a struggle against the foreign Government; foreign rule, and not against the foreign people. One of the most learned men of this country has gone on record to say that I hate the British Government, but I love the British people. We should remember that also because we belong to that culture and *sanskriti* where we are daily reciting *Vasudhaiva Kutumbakam.* When it comes to some of the political issues, we become very narrow; we talk of the Tuluka, we talk of the State, and, sometimes, of the country and forget what is *vasudha.* So, after 1857, you go through the history of India, whether it is the struggle in Bihar, Chauri Chaura, whether it is the Dandi Yatra in Gujarat, or, whether it is the Jallianwala Bagh incident or a sacrifice made in a small village of Uttar Pradesh. I visited Lakhimpur Kheri. I was surprised to know that in one single village there are 22 freedom fighters. In one single village 22 freedom fighters are there! A man aged 24 years belonging to the Misra family was, I was informed, the last man hanged by the British Government in the year 1944 for his participation in the 1942 Quit India Movement in Uttar Pradesh. He was hanged at the age of 24. His son is right now alive and staying in Lakhimpur Kheri. Like that, we have Shri Vinod Kinariwala in Gujarat, who opened his shirt and told the Britishers to fire. He was a student studying in the Gujarat College of Ahmedabad. He was fired by the Britishers. There are dozens and dozens and hundreds and hundreds of people all over the country. Some of them, we do not know also. Some of them, we do not remember also. But memorials are erected for great events like the Jalliawallah Bagh or 1857 Mutiny and for Jhansi ki Rani, and Dhanna Singh Gurjar in Meerut. These are the people. Then, we had Madan Lal Dhingra, then Bhagat Singh, then Chandrasekhar Azad. Then,

, we had Bipin Chandra Pal; Lal, Pal and Bal. The entire India is there, whether it is Tilak, Lok Manya Tilak, Gokhle, Mahatma Gandhi, they all fought for the freedom and the fruits of this freedom struggle we are enjoying today sitting in this Parliament. In fact, British Government had decided in the year 1935...*(Interruptions)...* Yes; Yes; those who tendered apology are also sitting in this House and those who sacrificed are also sitting in this House. But that is the democracy of our country, one of the best democracies in the world. *...(Interruptions)...* A correct suggestion was made that the trustee should belong to a freedom fighter family. Now, I will give you the name of Motilal Nehru. Was he not a freedom fighter? Then, I will give you the name of Pandit Jawaharlal Nehru. Was he not a freedom fighter? Then, Shrimati Indira Gandhi. *...(Interruptions)...* She is the daughter of Nehru, Motilal Nehru's grand-daughter.

MR. DEPUTY CHAIRMAN. Mr. Rashtrapal, kindly address the Chair. *...(Interruptions)...*

SHRI PRAVEEN RASHTRAPAL: Sir, I want to address others also.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Why are you addressing them? *...(Interruptions)...*

SHRI PRAVEEN RASHTRAPAL: Some of them are listining very attentively. So, when you start from Motilal Nehru, come to Jawaharlal Nehru, then Indira Gandhi, then her son and *...(Interruptions)...* he was the Prime Minister and ... *(Interruptions) ...* her Bahu; is she not member of the freedom fighters family? The *Bahu* of the Gandhi family is definitely a member of a freedom fighters family. So, he has given a correct suggestion. She is not only the President of a main political party, one of the oldest in this country. According to my information, Bhartiya Jan Sangh came into being in the year 1949; that is safely after Independence. Safely after Independence. Before Independence, they had no role. *...(Interruptions)..* BJP came into being in 1980, very young, wearing* very young. So, they don't have the experience of the freedom struggle of this country, whereas the Indian National Congress was founded. *...(Interruptions)....*

श्री रुद्रनारायण पाणि: सर यह क्या हो रहा है? ...(**व्यवधान**)... यह क्या हो रह है? ...(**व्यवधान**)...

श्री एस. एस. अहलुवालिया (**झारखंड**): उपसभापति महोदय, ...(**व्यवधान**)... एक मिनट **...**(**व्यवधान**)...

*Expunged as ordered by the Chair.

श्री उपसभापति: उन्होंने क्या कहा? ...(**व्यवधान**)...

श्री विजय कुमार रूपाणी: सर, ये कह रहे हैं. ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: आप बैठ जाइए ...(**व्यवधान**)... श्री प्रवीण राष्ट्रपाल जी, आप ठीक से बोलिए। ...(**व्यवधान**)...

SHRI PRAVEEN RASHTRAPAL: So, in view of that...(Interruptions)... In view of this, I support *...Interruptions)...*

श्री एस. एस. अहलुवालिया: महोदय, राष्ट्रपाल जी बहुत अच्छे ओरेटर हैं, हमें मालूम है ...(**व्यवधान**)... डिप्टी चेयरमैं सर, आप जरा ध्यान दीजिए, मैं खड़ा हूं ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: मै ध्यान दे रहा हूं ...(**व्यवधान**)...

श्री एस. एस. अहलुवालिया: नहीं, जिस वक्त यह बात कही गयी, तब भी आपने ध्यान नहीं दिया ...(**व्यवधान**)...

SHRI PRAVEEN RAHTRAPAL: Let me conclude. *...(Interruptions)...*

Mr. Deputy Chairman, let me conclude. *...(Interruptions)...*

श्री एस.एस.अहलुवालिया: मेरी बात आप सुन लीजिए ...(**व्यवधान**)....

SHRI PRAVEEN RASHTRAPAL: I am not yielding. *...(Interruptions)...* I am not yielding. *...(Interruptions)...* I am not yielding. *...(Interruptions)...* You are a senior Member. I am not yielding. *...(Interruptions).*

SHRI S.S. AHLUWALIA: I am speaking to the Chair.

SHRI PRAVEEN RASHTRAPAL: I will not yield today. *...(Interruptions).*

SHRI S.S. AHLUWALIA: Don't yield. Who bothers? *...(Interruptions)...* Who bothers? *...(Interruptions)...*

SHRI PRAVEEN RASHTRAPAL; Let me conclude. *...(Interruptions)...* Let me conclude.... *(Interruptions)...* Let me conclude. *...(Intenuptions)...*

श्री एस. एस. अहलुवालिया: नहीं, सर, आप मेरी बात सुनिए। ...(**व्यवधान**)... वे अच्छे वक्ता हैं ...(**व्यवधान**)... बहुत अच्छा भाषण दे रहे हैं ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: उसे छोड़िए , हो गया ...(**व्यवधान**)... अच्छे है, बुरे हैं, यह अलग बात है। ...(**व्यवधान**)...

श्री एस. एस. अहलुवालिया: आप ऐसा मत करिए, सर। ...(**व्यवधान**)... पहले हमारी बात तो सुन लीजिए ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: अब बोलिए ...(**व्यवधान**)... आप बोलिए ...(**व्यवधान**)... मै बोल रहा हूं, आप बोलिए। आप बात करते ही you attack the Chair. ...(**व्यवधान**)...

श्री एस. एस. अहलुवालिया: अगर मैंने किसी पार्टी के बारे में indecent शब्दों का ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: मैं देखता हूं। I will remove it …(Interruptions)… I will look into it …(Interruptions)…

श्री एस. एस. अहलुवालिया: इसमें देखना क्या है? ...(**व्यवधान**)... इसमें देखने का क्या है? ...(**व्यवधान**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: If it is unparliamentary, we will remove that,

श्री एस. एस. अहलुवालिया: अगर आपने नहीं सुना है, तो सेक्रेटेरिएट से पूछिए ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: मैं पूछुंगा न? ...(**व्यवधान**)...

श्री एस. एस. अहलुवालिया: और अगर सुना है तो इसे एक्सपंज करिये। ...(**व्यवधान**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I have expuged it. *...(Interruptions)...* I have expunged it. *...(Interruptions)...*

SHRI S.S. AHLUWALIA: That is all.

श्री उपसभापति: आप उसके लिए इतने गुस्से में क्यों आ गए? ...(**व्यवधान**)... आप दिखा रहे हैं ...(**व्यवधान**)... You are doing it. I am not doing it. *...(Interruptions)...*

SHRI PRAVEEN RASHTRAPAL: I am concluding. I am concluding. *...(Interruptions)...*

श्री एस. एस. अहलुवालिया: आप सुनने के लिए तैयार नहीं थे ...(**व्यवधान**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: You can't accuse me like that. *...(Interruptions)...* The whole House knows about it. *...(Interruptions)...*

SHRI PRAVEEN RASHTRAPAL: Sir, I take this opportunity... *(Interruptions)...*

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Rashtrapal, when you speak, please use parliaments words.

SHRI PRAVEEN RASHTRAPAL: Sir, I do.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No you have not used parliamentary words.

SHRI PRAVEEN RASHTRAPAL: Sir, if you find anything unparliamentary, you may get it removed *(Interruptions).* It is not unparliamentary.. *.(Interruptions)...*

SHRI B.K. HARIPRASAD: If it is unparliamentary, *...(Interruptions)...*

श्री रुद्रनारायण पाणि: उन्होंने हाफ पेंट कहा है। ...(**व्यवधान**)...

श्री जय प्रकाश अग्रवाल (**राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली**): इसमें अनपार्लियामेंटरी क्या है? ...(**व्यवधान**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: It is for the Chair to decide which words are parliamentary and which are unparliamentary. You may please sit down *...(Interruptions)...* The word he has used is unparliamentary; it has been said there that it is unparliamentary; please don't argue.

SHRI PRAVEEN RASHTRAPAL: Sir, I take this opportunity to salute all freedom fighters; I dislike those who have not participated in the struggle of the freedom fighters when they were alive at the time of the freedom struggle and were just about 18 years old then. I take this opportunity to salute them. But the amendments are very beautiful amendments in the sense that we are allowing the Trust to be audited by the Comptroller and Auditor General of India. The Trust has been asked to call at least one meeting in a year. The audited accounts are to be presented to both Houses of Parliament, and even when the Trust is framing some rules and regulations, they are also to be presented to both Houses after they are framed. It was suggested very rightly that the Trust was not given money in the past as a result of which proper care could not be taken. I suggest that the hon. Minister concerned take care of not only the Jalianwala Bagh Memorial, but all such memorials all over the country may be given appropriate assistance from the Government of India.

With these words, Sir, I support the Bill and recommend that it be passed.

श्री वीरेन्द्र भाटिया (**उत्तर प्रदेश**): उपसभापति जी, जलियांवाला बाग राष्ट्रीय स्मारक बिल के समर्थन में या विरोध में बोलने से पहले मैं एक बात जरुर कहना चाहूंगा कि अभी बहुत भावुक भाषण मैंने दोनों, तीनों पक्षों से सुने। इसमें कोई शक नहीं कि जलियांवाला बाग का जब नाम आता

है, क्योंकि बचपन में जलियांवाला बाग के बारे में हम लोगों को इतिहास में पढ़ाया जाता था, तो वह चित्र भी हमारी आंखो के सामने आ जाता है कि किस प्रकार अंग्रेजों ने आजादी के परवानों, आजादी के सिपाहियों को घेरकर उनके साथ व्यवहार किया था, किस प्रकार के उनकी इरादतन हत्या की थी। वे आजादी की लड़ाई के शहीद थे, आजादी की लड़ाई के मतवाले थे, जिन्होंने ब्रिटिश दासता के सामने घुटने नहीं टेके थे।

महोदय, मैं यह कहना चाहूंगा कि 1857 का गदर हमारा पहला स्वतंत्रता संग्राम था, लेकिन अगर ब्रिटिश शासन के कफन में कील ठोंकने की शुरुआत अगर हुई, तो वह 1919 में जलियांवाला बाग के कांड के बाद ही हुई। उस समय का माहौल अगर हम देखें, तो उस समय इंडियन नेशनल कांग्रेस किसी व्यक्ति विशेष की पार्टी विशेष नहीं थी। यह देश की आजादी का एक आंदोलन था और उस न आंदोलन में हर वर्ग के हर धर्म के लोग, हर राज्य के लोग जुड़े हुए थे। अगर पंजाब में लाला लाजपल राय नेतृत्व कर रहे थे, तो महाराष्ट्र में तिलक कर रहे थे, बंगाल में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस कर रहे थे, जिनसे बड़ा तो महान क्रांतिकारी शायद देश में हुआ ही नहीं। आजादी की लड़ाई में उत्तर प्रदेश में श्री मोती लाल नेहरु, सप्रू, काटजू, तमाम आजादी की लड़ाई लड़ने वाले लोग थे, जिन्होंने इस आजादी की लड़ाई में अपनी आहुति दी, जिन्होंने बलिदान दिया और 1919 में जो शुरुआत हुई थी ब्रिटिश शासन के कफन में कील ठोकने की, वह 1947 में पूर्ण हुई, जब देश को आजादी मिली। मेरे कहने का मतलब सिर्फ एक है कि आज की इंडियन नेशनल कांग्रेस सत्ता के लिए है, राजनीतिक कांग्रेस है और उस समय की इंडियन नेशनल कांग्रेस सिर्फ राजनीतिक शक्ति नहीं थी, बल्कि जनता की एक शक्ति थी, सामाजिक और राजनीतिक आंदोलन था, महात्मा गांधी के पदचिन्हो पर चलकर, अहिंसा के रास्ते पर आजादी की लड़ाई लड़ने का, आजादी प्राप्त करने का एक प्रतीक था। इसलिए जब यहां पर इंडियन नेशनल कांग्रेस के अध्यक्ष का नाम आया, तो अम्बिका जी ने जो एक बात कही, मैं उससे सहमत हूं कि जलियांवाला बाग पर राजनीति नहीं होनी चाहिए। कुछ मुद्दे ऐसे होते है जिन पर सत्ता पक्ष, विरोधी पक्ष और सभी राजनीतिक दलों में मतैक्य होना चाहिए, जब आप सबकी सहमति की बात करती हैं, तो इस वर्तमान परिप्रेक्ष्य में केवल इंडियन नेशन कांग्रेस का अध्यक्ष ही क्यों उसका सदस्य बनाया जाता है और विरोधी पार्टीयों का अध्यक्ष क्यों नहीं सदस्य बनाया जाता। आपने कहा, सही है, पंडित नेहरु के परिवार के योगदान को नकारा नहीं जा सकता, सुभाष चन्द्र बोस के योगदान को नकारा नहीं जा सकता, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने जो इस देश की आजादी के लिए किया, उसको हर आदमी को मानना पड़ेगा, लेकिन आज जब कांग्रेस केवल एक राजनीतिक शक्ति में रुप में रह गई है, उस समय आप विरोधी पक्ष के लोगों को और विरोधी पक्ष ही नहीं, मैं एक की बात नहीं कह रहा हूं, राष्ट्रवादी कांग्रेस के नेता श्री शरद पवार जी बैठे हुई है, ये भी तो कांग्रेस से है, ये क्यों नहीं, कम्युनिस्ट पार्टी के लोग क्यों नहीं, समाजवादी पार्टी के लोग क्यों नहीं, बी. जे. पी. के लोग क्यों नहीं, और भी

पार्टियों के राजनीतिक दलों के अध्यक्षों को भी उसमें शामिल किया जाना चाहिए। तेलुगू देशम क्यों नही, मै नाम ...(**व्यवधान**)...

श्री राजवी शुक्ल (महाराष्ट्र) **:***

श्री उपसभापति : नही, नही, यह निकाल दीजिए रिकार्ड से। ...(**व्यवधान**)...

श्री विरेन्द्र भाटिया :आप क्या थे? ...(**व्यवधान**)...

श्री अमर सिंह (उत्तर प्रदेश) **:** आप यह वापिस लीजिए, नही तो हम हाऊस नही चलने देंगे ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति : वह मैंने रिकार्ड से निकाल दिया है। ...(**व्यवधान**)... I have removed it ...(**व्यवधान**)... अमर सिंह जी, ...(**व्यवधान**)... अमर सिंह जी, प्लीज। That has gone out of record. वह रिकार्ड से निकाल दिया है। ...(**व्यवधान**)...

श्री विरेन्द्र भाटियां : समाजवादी लोगों का कंट्रिब्यूशन आजादी की लड़ाई में कम नही रहा, अगर राजीव शुक्ल जी को नही मालूम है तो राजीव शुक्ल जी इतिहास पढ़ लें।...(**व्यवधान**)...

श्री रुद्रनारायण पाणि : आजादी को न मानने वाला यहां कोई भी नही है। ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति : बैठिए बैठिए। ...(**व्यवधान**)... पाणि जी, बैठिए। ...(**व्यवधान**)... आप उनको डिस्टर्ब मत कीजिए,आप बैठिए। ...(**व्यवधान**)...

श्री रुद्रनारायण पाणि :*

श्री उपसभापति :आप बैठिए। Nothing will go on record. आप बोलिए। ...(**व्यवधान**)...

श्री रुद्रनारायण पाणि : *

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Nothing will go on record.

श्री विरेन्द्र भाटिया : समाजवादी पार्टी के डा. लोहिया, आचार्य कृपलानी, अशोक मेहता, नरेन्द्र देव, इन सबका योगदान आजादी की लड़ाई में कम नही आंका जा सकता। होता सिर्फ यह है कि इतिहास के पन्नों में कुछ ही लोगों का नाम दर्ज किया जाता है, क्योकि वे सत्तारुढ़ पार्टी से संबंधित है, तो यह बात दूसरी है। हां, वे ऐसे समाजवादी थे कि जब सत्ता प्राप्त हो गई तो उन्होंने सत्ताभोग नही किया,सत्ता से बाहर होकर सामाजिक क्रांति के लिए वे लोग लड़े अब वे समाजवादी इतिहास के पन्ने में कहां रह गये। ...(**व्यवधान**)...

*Not recorded.

श्री उपसभापति : पाणि जी, आप खामोश हो जाएं, दूसरे लोग बैठे है आप भी बैठकर सुनिए।

श्री विरेन्द्र भाटिया : मेरा सिर्फ यह कहना था और मै आज भी कह रहा हूं कि इसमें ...। इसमें तमाम राजनैतिक दलों के अध्यक्षों को भी सम्मिलित किया जाएगा। इससे लोगों को यह स्पष्ट होगा और लोगों को यह लगेगा कि संसद ने जो बिल पारित किया है, जलियांवाला बाग के नाम पर अभी-अभी लोगों में और भारत की संसद में एकता प्रदर्शित होती है।

मै सिर्फ दो मिनट और लूंगा। आपने एक बात जलियांवाला बाग के बारे में कही है, हो सकता है कि अम्बिका जी ने देखा भी हो, लेकिन मेरा तो बचपन ही अमृतसर मे. बीता है मेरी ननिहाल अमृतसर में रही है। जब भी मै ननिहाल जाता था तो जहां रोज मेरा स्वर्ण मंदिर में जा कर मत्था टेकना आवश्यक था, तो जलियांवाला बाग में जाना भी आवश्यक था, लेकिन अम्बिका जी, आप अपने दिल पर हाथ रख कर कहिएगा आप भी जलियांवाला बाग गई है जलियांवाला बाग में जो शहादत हुई है या जलियांवाला बाग कांड की इस देश की आजादी की लड़ाई में जो भूमिका है, क्या आपने जलियांवाला बाग को उसके अनुरुप बनाया है? छोटे-छोटे नेताओं की समाधियों पर भी करोड़ों रुपया खर्च हो रहा है, लेकिन जलियांवाला बाग में जो होना चाहिए जो विदेशी दासतां के विरोध का प्रतीक है, उसे जो स्वरुप देना चाहिए वह आप नही दे सके है।

अंतिम बात कहते हुए मै अपनी बात को समाप्त करता हूं कि जब हम बचपन में पढ़ते थे तो इतिहास के पन्नों में जलियांवाला बाग के बारे मै एक पूरा चैप्टर पढ़ाया जाता था। अभी कुछ दिन पहले ही हमने हाई स्कूल और इंटर में इतिहास के पन्ने देखे है, उससे जिस प्रकार से जलियांवाला बाग के बारे में बताया जा रहा है, मै यह नही कर रहा हूं कि गलत बताया जा रहा है, लेकिन आप केवल दो लाइनों में जलियांवाला बाग को पढ़ा रहे है। जलियांवाला बाग में जो शहीद हुए जो आजादी के परवाने थे, जो आजादी के लिए संघर्ष कर रहे थे और जिन्होंने अपनी जान की आहुति दी, क्या यह उसके अनुरुप है। ये ऐक्ट तो पास होते रहेंगे, लेकिन कृपया इतिहास के पन्नों में जलियांवाला बाग की घटना को उचित स्थान दीजिए। इन्ही शब्दों के साथ मै अपनी बात समाप्त करता हूं। जय हिन्द, जय भारत।

SHRI PRASANTA CHATTERJEE (West Bengal): Sir, the national monuments linked with our Independence movement must be maintained in a best way to remember the glorious anti-imperialist struggle, the history and to perpetuate the memories not only of the freedom fighters but also of such historical places. It is a fact that the freedom movement was led by the Indian National Congress. Mahatma Gandhi led the Satyagraha Movement. But, at the same time, the direct movement against the British Colonialism, against the British rule, workers' struggles, the students'

strikes, the peasants' revolt, the Gadar Movement all of them have played very important role. The role of Azad Hind Bahini and everything is there. Sir, many such incidents have not found the required place in the history of our freedom movement also. Sir, in this particular case, how has the Government reacted? Actually, Pandit Nehru had died in 1964, and this matter came for discussion in 2003, in the Standing Committee; and now, finally, in the end of 2006, in the House. This is the Government's initiative to perpetuate the memory, to build up the trustees, to fill up the vacancies and all. Such was the role of the Government. Now, Sir, how the incident of 1919 has been written in the Aims and Objects to perpetuate the history? The incident of 1919, brutal attack on unarmed civilians at Jallianwala Bagh influenced even Bhagat Singh at the age of only 12 years. We know that, Sir, it has been recorded that Bhagat Singh immediately went to the Bagh, collected its soil in a bottle and kept it as a constant reminder of the hurt and humiliation that the Indian people had suffered. Such was the history, Sir, anti-imperialist history and you know how General Dyer opened fire and 1600 rounds of ammunition on the unarmed crowd of 10,000, killing 379 (according to the estimate) and unofficially it was put over 1000 and leaving over 1200 wounded. Such was the history. Sir, I would like to mention about Tagore. He actually first reacted over the killings of the taragic incident and I know from history he could not sleep for the whole night. He even discussed the matter with C.R. Das and before any political leaders reacted, it was Rabindranath Tagore who reacted and that influenced very much the entire revolt against this and poet said, "These are the reasons which have compelled me to ask your Excellency, with due deference and regret, to relieve me of my title Knighthood" and "...are without parallel in the history of civilised Governments". He mentioned that while taking this decision. Sir, in the Act 1951, the President of Indian National Congress was included in the Trust. It is a fact. But after the demise of the three persons, Shri Jawaharlal Nehru, Saiffuddin Kichlu and Maulana Abul Kalam Azad, an amendment was necessiated in the said Act and then, this Amendment Bill, 2003 was prepared by Shri Jagmohan when he was the Minister and it was placed in the Committee. What is my reaction? My reaction, Sir is, it would; have been better if President, Indian National Congress, would not have been included in the Trust. In the Standing Committee also, some spoke in favour and some spoke against. It was

not a unanimous opinion in that forum. I feel the Home Minister has been left out. Why? The Home Minister must have a place there. Who can serve the memorials, the ideals of freedom movement in general and the Jallianwala Bagh movement in particular. The three eminent persons should be nominated in the Trust by the Central Government. Who will decide and how it will be decided? Who are the eminent persons? That will have to be decided keeping in mind the aims and objectives of this Trust. So, let there be a Committee. It is good that the Leader of the Opposition has been included. The PM, Leader of the Opposition, the Minister of Culture have been included. Sir, methods should be there to find out who are the eminent persons to be included in the Trust. Lastly, Sir, I would like to mention many places. I know, Sir, our Calcutta Town Hall, the memory of Rabindranath Tagore is very much linked to the freedom movement. When I was Mayor I asked the Government to help me to build up a historical freedom monument there. I was not replied. There are places like Chouri Choura, Kamagatu maru. In Calcutta, there are Benoy, Badal, Dinesh and all other such historical places which should be maintained in a befitting manner as a historical monument in such places. With these few words, with these observations, I support this Bill. Thank you.

SHRI RAVULA CHANDRA SEKAR REDDY (Andhra Pradesh): Thank You, Sir. This amendment has been brought before this House for three or four reasons. The first one is to constitute a Committee consisting of the hon. Prime Minister, the President of the Indian National Congress and the hon. Leader of the Opposition in the Lok Sabha. I don't know the logic of leaving the hon. Leader of the Opposition in the Rajya Sabha as a Member of the Committee. Sir, Lok Sabha gets dissolved every now-and-then. But, since Rajya Sabha is a permanent House, it is better if the hon. Leader of the Opposition in the Rajya Sabha is also included in this. Sir, the hon. Leader of the Opposition in the Punjab Assembly - when the Chief Minister of Punjab is there -- is also required to be included in the Committee. Presently, the Congress is the ruling party in Punjab and also at the Centre. In future, you may require a post in the Committee. Nobody knows; you come to this side. So, it is essential to include the hon.-Leader of the Opposition of Punjab Assembly in the Committee.

Sir, I had visited Jallianwala Bagh. It needs some facelift to preserve and inspire the people. We also need to bring some literature on Jallianwala Bagh in all the Indian languages and make it available for visitors. For

future generations, it is very much essential to bring all the places of inspiration and places of learning like Cellular Jail or the places of importance in Kolkata under one umbrella so that the people will have information, which works as a source of inspiration.

Apart from this, we are going to celebrate the 150th Year of our Freedom Struggle. On the one hand, we are preserving and conserving all this and, on the other, we are ignoring our freedom fighters. Even today, people from my own State are running from pillar to post in the corridors of power in Delhi to get pension! The situation is very pathetic. We had a discussion on this in this august House and we also met the hon. Home Minister to hear the pleas of the freedom fighters and to solve their problems and grievances. But, nothing has happened.

The other point is, there are five amendments to this Bill brought in before the House.

The other point I wish to make is that it is good that this has brought within the purview of the CAG. I welcome this move. It is very important to see that accounts are audited by the highest authority of our country.

The other amendment is inclusion of Section 5. It proposed to include the term of office. It is proposed for five years, with an option of getting renomination for another term of five years. In that event, the suggestion made by me for inclusion of the hon. Leader of the Opposition in the Rajya Sabha and also the hon. Leader of the Opposition in the Punjab Assembly is relevant.

And, I fully agree with Mr. Prasanta Chatterjee that the mode of selection of eminent person should be defined. Normally, eminent persons, who are close to the ruling party, always find place. Tomorrow, if the opposition party comes to power, again, eminent persons come close to the ruling party. So, there should be some mechanism.

SHRI V. NARAYANASAMY (Pondicherry): We will consider your case.

SHRI RAVULA CHANDRA SEKAR REDDY: If that is the case, I will recommend your name. No one is better than you. It will be a unanimous resolution from our House to include Mr. Narayanasamy. Sir, I thought that he is going to Pondicherry as the Chief Minister. But, unfortunately, he is here.

So, Sir, my suggestion is that let there be a mechanism for selecting the three eminent persons. The Bill specifically mentioned the three names - the Prime Minister, the Leader of the Opposition in Lok Sabha and the Minister of Culture. In the same way, you can also define 'eminent persons' to be nominated in the Commitee. Then, as I said, there is a need to bring all the places of importance, including historical, under one umbrella and let the proposed Committee head all those places of importance. Thank you.

SHRI EKANATH K. THAKUR (Maharashtra): Thank you, Sir, for giving me this opportunity to speak. I am here only to make one point. Everybody who is an Indian is proud of the glorious freedom struggle. As our friends have mentioned, the First War of Independence was fought in 1857.

कुटियों में थी विषय वेदना; महलों में आहत अपमान।

नाना धुंधु पंत पेशवा, जुटा रहा था सब सामान।

Many names were mentioned. The names of Nana Saheb Peshwa and Jhansi ki Rani were not mentioned. And, I thought I should mention them. That is how the 1857 War of Independence was fought. One of the greatest milestones in our freedom movement has, of course, been the Jallianwala Bagh incident. The sacrificies made there continue to inspire millions of Indians even today. There were about 379 people who were killed. Thousands of others were maimed, bruised and marred. That was one event which made it certain that the Britishers have to leave India forever. That was one event which made it clear to everyone in the world that the Britishers have lost their game in India. And, therefore, with this Bill a great memorial is being resurrected, refurbished and re-presented to India and to the world. It must be welcomed.

I personally visited Jallianwala Bagh, and I believe, that our leaders, up to now, have not underscored the importance of the sacrificies that were made there. I hope that, at least after this Bill, this Government, which has been in Government for very long, will pay attention to the need to erect a-really prestigious memorial there.

Sir, I am here to make only one or two points on behalf of my party. The Union Government, unfortunately, does not realise that it is a Government of 1070 million people; 107 crore people of India. It is a Government which represents the largest democracy in the world. Out of every six persons

on this planet, which has been wrongly called the Earth,—actually, 7:10 of it is water— one is an Indian. This Government is ruling that kind of largest democracy One of their freedom fighters, who was from my State, Maharashtra, the former Deputy Prime Minister of India, Late Shri Y.B. Chavan, had reminded all rulers—and I say it with great pride—that "when you are in power, play the politics of addition and don't play the politics of subtraction." That was the point made by Late Mr. Y.B. Chavan. If you ask me, it is one singular insight into the politics of democracy that when you are in power you have to play the politics of addition and not the politics of substraction. One of the greatest admirers, and greatest disciples of Late Shri Y.B. Chavan is sitting here in this House in the person of another great national leader, Shri Sharad Pawarji. Sir, I have to say this because this Government does not recognise that it is running the largest democracy in the world. It is not recognising that it represents one out of every sixth human being on this Planet. If it were to realise this it cannot play partisan politics, which is not played even in our Gram Panchayats and Municipalities in each matter as the Jallianwala Bagh Memorial. To bring in this Jallianwala Bagh National Memorial (Amendment) Bill, 2006, the name of a political party, the President of the Indian National Congress, is an insult to the millions and millions of freedom fighters, who despise this party. *(Interruptions)* I tell you because I have attended several meetings of freedom fighters; I have addressed them; and they hate you for what you have done to this country. *(Intenvptions)* They hate you. *(Interruptbns)* The freedom fighers hate you for what you have done to this country. *(Interruptions)* Yes, let me tell you this... *(Interruptions)*

SHRI B.K. HARIPRASAD: He represents a political party which... *(Intenvptions)*

SHRI EKANATH K. THAKUR: You cannot challenge the patriotism of my political party. *(Interruptions)*

श्री उपसभापति : आप बैठिए ...(**व्यवधान**)...

श्री सुरेन्द्र लाठ (उड़ीसा) **:** क्या आप सुनने को तैयार है? ...(**व्यवधान**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Nothing will go on record. *(Interruptions)*

आप खत्म कीजिए ...(**व्यवधान**)...

SHRI B.K. HARIPRASAD:*

*Not recorded.

श्री सुरेन्द्र लाठ:*

SHRI EKANATH K. THAKUR: You must understand this. *(Interruptions)* Sir, I tell you that patriotism of my party cannot be questioned. *(Interruptions)* The patriotism of Shri Balasaheb Thackeray cannot be questioned. *(Interruptions)* Yes, he was saying that my political party has... *(Interruptions)* I tell you that freedom fighters hate you. *(Interruptions)* If there are... *(Interruptions)*

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Thakur, you please address the Chair. You had only three minutes. Please conclude.

SHRI EKANATH K. THAKUR: Sir, I speak once in a while. *(Interruptions)*

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Yes; but what can be done. The time is fixed.

SHRI EKANATH K. THAKUR: Sir, as per the World Bank's definition, if a person earns less than one dollar a day, then, a man is poor. Then, according to that definition, 350 million people are poor today, after independence. And for this poverty, abysmal poverty to the point of degradation, this Congress party has been responsible. And, that party, the Congress which has made India poor, which has made India such a strife-ridden State, wants a place in a Bill. *(Time-bell)* Sir, I only want to say one thing that I have nothing personal against any political party, but this kind of act of bringing a specific political party here shows as if we, all other parties, are not national, not patriotic, not...*(Interruptions)*

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Let him speak. The Minister will reply. I have not asked you to reply. *(Interruptions)*

SHRI EKANATH K. THAKUR: This is sycophancy of the worst kind *(Interruptions)*

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Thakur, please conclude. *(Interruptions)* Please conclude. *(Interruptions)*

SHRI EKANATH K. THAKUR: Sir, why I am worried about Soniaji is only because that it may come under the Office of Profit and she may come in trouble. *(Interruptions)* That is my separate point. *(Interruptions)* it is my apprehension. *(Interruptions)*

MR. DEPUTY CHAIRMAN: She is a Member of the other House. You should not take her name.

---

*Not recorded.

SHRI EKANATH K. THAKUR: No; no. I am only saying that if it comes under the Office of Profit, she may be in trouble. But what all I am trying to say is that the Leader of the Opposition, Rajya Sabha, should be included; the Leader of the Opposition, Punjab Legislative Assembly, should be included, and the name of a specific political party should be removed; otherwise, all those political parties, which are representing in both the Houses of Parliament, their representatives should be a part of this Board of Trustee. Thank you, Sir, for having given me this opportunity.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: The hon. Minister.

SHRIMATI AMBIKA SONI: Sir, I am very grateful to all the Members for the contributions they have made, for the suggestions they have given. I have also heard the reservations about a couple of clauses. If I had any intentions, as the Minister-in-charge, to bringing in any politics, there could have been a lot of things that one could have done.

SHRIMATI JAYA BACHCHAN (Uttar Pradesh): Not so easy in a democracy.

SHRIMATI AMBIKA SONI: I accept that it was only, as late as in 2003 that the proposal to amend this Act to fill in the three vacancies was mooted. It was introduced in the House and sent to the Standing Committee in May, 2003. The Standing Committee had several meetings, discussing clause-by-clause the Bill. I don't want to go into all the details, but since the Standing Committee has referred to, I am making a mention of it. The Standing Committee had objection to the clause of involving the Home Minister. They also objected to and rejected the suggestion of making the Secretary of the Ministry of Culture as a Member. They did not accept these two positions. I would just like to quote briefly the Chairman of the Standing Committee, Shri Nilotpal Basu. When he was given this Bill to consider in the Standing Committee, he said, 'The proposal does not include the name of the President of the Indian National Congress.' The Chairman of the Standing Committee went on to say that 'I hope the exclusion of the President of the Indian National Congress does not tantamount to or does not indicate that the composition of the Jallianwala Bagh...' Sir, I would rather quote exactly. 'The Committee is of the view that the composition of the Jallianwala Bagh National Memorial Trust, as described in the parent Act, was in order and the inclusion of the President of the Indian National Congress was in keeping with the contribution of the Indian National Congress in the freedom struggle movement in general and the glorious

struggle which led to the Jallianwala Bagh incident in particular.' I am quoting. *...(Interruptions)...*

SHRIMATI BRINDA KARAT (West Bengal): But that is that period. *...(Interruptions)..:* It is initial part. Please read it further.

SHRIMATI AMBIKA SONI: Let me just quote. *...(Interruptions)...* Please let me just quote. *...(Interruptions)...* Let me just quote...*(Interruptions)...* I am sorry, Sir, I have heard all the Members. *...(Interruptions)...*

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Brindaji, let her speak. *...(Interruptions)...*

SHRIMATI AMBIKA SONI: Sir, I have heard all the Members. *...(Interruptions)...*

MR. DEPUTY CHAIRMAN: She is quoting from the Report of the Standing Committee. *...(Interruptions)...* Listen to her.

SHRIMATI AMBIKA SONI: I am just reading the quotation. *...(Interruptions)...* Sir, let me just read. After I have spoken, if there is anything which I have quoted wrongly, you have absolute right to raise your objection, but not half-way through my quotation. I haven't quite finished. I am just trying to say that the Chairman of the Standing Committee had to say that the intention of the present Bill can and should in no way be to belittle the contribution of the Indian National Congress in the freedom movement and he went on to ask that the Department of Culture must prepare and present aims and objectives of this Bill. The aims and objectives of this Bill were put forward by the Minister of Culture at that time which said that the Jallianwala Bagh National Memorial (Amendment) Bill, 2006 is being enacted only—I would not go into all those things—as, over a period of time, with the passing away of the trustees appointed for life, the situation has changed and the Government does not have a proper representation on the Trust. Further, the Government cannot appoint trustees for life without making necessary amendments to the said Act. Therefore, with a view to filling up the vacancies caused on the account of passing away of the life trustees, it has become necessary to amend the said Act through the Jallianwala Bagh National Memorial (Amendment) Bill, 2003. Then, the Chairman of the Standing Committee asked the Government in office at that time to state the aims and objectives of bringing this Bill. I have just read out the aims and objectives of bringing out the Bill. But nevertheless having quoted it, I would say that the Committee did send back the Bill with the definite recommendation of not including the Home

Minister and not including the Secretary as a member of the Trust. Some Members did refer to the fact that it was not a unanimous resolution by the Standing Committee. "...Six members belonging to different political parties, senior political figures, objected in writing and recorded their dissent. When this Bill went to the then Cabinet, they chose not to accept several of the recommendations of the Standing Committee. Despite the fact that the Standing Committee did not want the Home Minister to be included, they rejected this suggestion of the Standing Committee. They rejected a couple of other suggestions regarding the framing of rules and other points of the Standing Committee and decided to put this Bill in its original form before the Parliament, which subsequently got dissolved."

Sir, I would say, for me it is a matter of great shame that this has not been amended all these years. But, as they have said, we are celebrating 150 years of the first uprising of the Freedom Movement. A National Committee under the hon. Prime Minister's chairmanship has been constituted where political opinions across this House are reflected, civil society is represented, journalists, artists and historians are represented. Under that committee we are going to make special efforts to honour all those freedom fighters who have not yet been honoured the way they should have been. Other hon. Members have suggested several other names. We have decided to constitute State-wise committees, which will tabulate the names of all those Freedom fighters, places where memorials need to be constructed and tributes of an independent nation, in 2006, to be paid in the memory of those who sacrificed to make us free today.

So, Sir, it is there limited aims and objectives which were guiding the 2003 amendment that I put before this House, just limited to the filling up of vacancies caused by the death of three great leaders of this country. I have not added, I have not tried to play with the emotions, the sentiments, which guided the constitution of this Act in 1951. We all acknowledge the role of the Indian National Congress. When Dr. Kichlu and Dr. Satpal led this Movement and were arrested, the countrywide protests that were held after their arrest, the Congress Session at Amritsar, all that reflected the predominant role of a political organisation which took under its wing, under its umbrella, other political forces, individuals and groups fighting for Independence. In my opinion, it is only with that sentiment that the President of the Indian National Congress was included, to honour the institution,

the organisation, which had the capacity of taking cross-currents of political opinion under its wing and fight the British to get us our Independence in 1947. It has not been my intention, in any way, to tamper with those emotions and those sentiments. I have not added anybody's name at this stage; I have not reflected any iota of sycophancy. I have tried to remain within the recommendations of the Standing Committee, within the stated aims and objectives of the amendement before us; I have tried to fill in only those three faces refecting the Prime Minister of India, the Leader of the Opposition and the Minister in-charge of Cultural Affairs. No politics can be insinuated with these three inclusions. In fact, an attempt has been made to reflect a broad political opinion on this Trust. It would make the Trust unwieldy if we took in many more people. It is a working Trust which should upgrade the facilities. I agree that a lot has been done and a lot more needs to be done and I am, on the floor of this House, committing the Ministry which I head at the moment, to do whatever is possible within our rules and permitted allocations to make the Jallianwala Bagh Memorial truly a memorial that every Indian, for generations to come, should look it to for inspiration to sacrifice for their own country.

Sir, there are suggestions which have come about the three Members who are nominated. I am willing to say that while framing the rules and regulations we could consider including these suggestions. One of the amendments is that all the rules and regulations framed by this Trust, all the accounts after being certified and audited by the Comptroller General would be placed before both the Houses. Those rules and regulations will, I am confident, reflect some of the suggestions and sentiments that Members have expressed here and I don't see any Indian today who would not want to sacrifice for his country. These rules and regulations would be reflective of the sentiments of members in this House. Sir, it is true that Shaheed Bhagat Singh was truely charged with the emotions of the tragedy in Jallianwala Bagh it moulded his revolutionary life; it is also true that Rabindranath Tagore gave up his Knighthood; it is also true that thousands and thousands of young people gave up everything they had so that we could to sit here. It is unfortunate if anyone of us, even in moments of extreme agitation or anger, should try and look at those sacrifices with a narrow perspective. I, in my initial few remarks, had appealed to the sentiments of this House, especially this year, when we are observing 150

years. We are planning across the board unitedly, to honour all our freedom fighters to re-build all those institutions which were connected with the freedom movement. It is in that spirit that I brought these three limited amendments and also made this whole process transparent. I agree that the Trust has been bereft of funds and there are some buildings, which the trust has been renting out. There is a 12-member Committee headed by Shri R.L. Bhatia, former Member of Parliament, from Amritsar. He successively fought and won several elections. Today, he looks after the management along with 12 other people and the moment this amendment comes through, I am confident that we will be able to undertake, in great details, the proposals which we already had conceptualised for this memorial to our freedom fighters. We will, in time to come, have a memorial which would become a place of worship for all freedom fighters like Harmandir Saheb or any other place of worship. That is what I promise to this House.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Now, the question is:—

"That the Bill to amend the Jallianwala Bagh National Memorial Act, 1951, as passed by Lok Sabha, be taken into consideration."

The motion is adopted.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Now, we shall take up clause-by-clause consideration of the Bill.

Clauses 2 to 6 were added to the Bill.

Clause 1, the Enacting Formula and the Title were added to the Bill.

SHRIMATI AMBIKA SONI: Sir, I beg to move:

"That the Bill be passed."

The question was put and the motion was adopted.